सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

# मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | सितंबर-अक्टूबर, 2016

*प्रार्थना से स्थिति बदलती है।*

## यहोवा बन्दियों को आज़ाद करता है।

सन्तों की प्रार्थनाएं कभी भी व्यर्थ नहीं जाती हैं। परमेश्वर के लिए सबसे मधुर चीज वह विचार है जो शुद्ध हृदय से निकलता है जो कि परमेश्वर के अपने विचार के स्तर के समान होता है। एक महान कवि कौन होता है? वही, जो नये विचारों की सुन्दरता से अभिव्यक्त करता हो। परमेश्वर उस समय प्रसन्न होते हैं जब हमारे विचारों का स्तर उनके विचारों के स्तर तक होते हैं। परमेश्वर के उन ऊंचे विचारों को प्रदान करने वाली वह पुस्तक बाइबल है। उसमें ऊंचे विचार, नये विचार, पवित्र विचार, सृजनात्मक विचार और परमेश्वर के श्रेष्ठ विचार दिये हैं। एक प्रार्थना करनेवाला व्यक्ति परमेश्वर के विचारों में ऊंचा और अधिक ऊंचा उठता जाता है। वह व्यक्ति जो ख्रीष्ट के साथ जी उठा है परमेश्वर के विचारों में लीन रहेगा। एक शुद्ध व्यक्ति अपने आत्मा में ऊपर-ऊपर उठता है। "दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी

***प्रार्थना से... पृष्ठ 3 पर***

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

***परमेश्वर की चुनौती***

*TV - Star Utsav*

***चैनल पर***

*हर* ***रविवारसुबह 7:30 से 8:00*** *बजे*

*(भजन संहिता 146:7)*

*मुझे याद है कुछ साल पहले किसी से मिलने मैं एक जेल में गया था। एक कैदी जिसे मौत की सजा दी गयी, मिली सजा पर अमल होने के इन्तजार में था। उच्च स्तरीय सुरक्षा प्रबन्धित ब्लॉक में जब मैं ने प्रवेश किया, वहाँ मैं ने एक सूचना-पट्ट लिखा पाया:'इन व्यक्तियों को मौत का दंड करार है।' ये शब्द भयानक थे। कैदियों से भरी कोठरी दर कोठरी पार करते मैं ने देखा कि एक एक कैदी का चहरा स्वयं मौत की तस्वीर था।*

*वह कोठरी जिसमें मुझे ले जाया गया, वह नरक की गलियारा से कुछ कम नहीं था। उस कोठरी में कैद, अकेला, एक आदमी था जिसने अपनी पत्नी की हत्या की है। अपनी पत्नी की हत्या की वह याद, उस यादाश्त से वह विकृत था। मैं मुश्किल से उस से बात कर पाया, क्योंकि वह समझने की स्थिति में ना था। मगर उसके कोठरी के बाहर खड़े होकर मैं ने उसके लिए प्रार्थना की थी। बाद में मुझे पता चला कि गवर्नर साहब ने उसके फाँसी की सजा को रोककर उसे आजीवन कारवास में बदल दिया। उस कैदी के जीवन में भी अद्भुत बदलाव आया।*

*एक या दो दिन में अपनी मौत का सामना कर रहे लोगों के मन का, भय, दहशत, मानसिक वेदना और आशाहीन पछतावे का वहाँ, मैंने आमने-सामने किया।*

*मौत की सजा से बदली सजा पाने ने उसे कितनी राहत पहुँचाई होगी! बाइबल ढ़ृढ़ता पूर्वक कहता है:'यहोवा बन्दियों को आज़ाद करता है।' (भजन संहिता 146:7) हाँ, वह राजाओं का राजा, उनको यह अधिकार और सामर्थ्य है कि वह बन्दियों को स्वतंत्र कर रहें है।*

*जब मैं लोगों से एकान्त में मन-से-मन की बात करने के लिए बैठता हूँ वे अपने बारे में सब सच-सच प्रकट करते है। बार-बार मैं ने यह पाया है कि वे अपने जीवन के किसी भाग में या अपने व्यक्तित्व के किसी भाग में वे कैदी हैं। तब वे अपने आपको सुधारने के लिए किये प्रयासों के बारे में और उनकी रिहाई पाने की बेबस इच्छा के बारे में मुझे बताते हैं।*

*कुछ लोग दारू और नशे के बारे में बात करते हैं; जो हस्पतालों में, जहाँ वे काम करते है, बहुत आसानी से मिल जाता था और वे उसके आदी हो गये थे; हाँ बहुत से डॉक्टर भी नशीले दवाओं के आदी हैं। फिर अन्य लोग जो तंबाकू की लत से छुटकारा पाने के लम्बे संघर्ष के बारे में बात करते है; कुछ लोग अजीब भय और रात के दौरान सताव के बारे में कहते है; और कई लोग विकृत यौन संबंध जिसके प्रकार और गुंजाइश असीमित है*

उसके बारे में बताते हैं; बढ़ती संख्या में लोगों के वैवाहिक जीवन में समस्यायें है: संदेह और संघर्ष उनको मार रहा है। ज्यादातर लोगों में , कुछ हद तक आजादी पाने की इच्छा रहती है। मगर जब वे अपने चारों तरफ देखते है, उन्हें यकीनन लगता है कि कोई रास्ता नहीं है। उन्हें सिर्फ अपने अनद्रूनी बंधनों के साथ ही जीना होगा। इस से भी बढ़कर, वे कुछ ऐसे धार्मिक लोगों को देखते हैं जो बुरी तरह से विह्वल है, मगर ठीक-ठीक होने का ढोंग रचते हैं। अविलंब, भाग्य पर भरोसा करने का नियतिवाद, वह मंदिर बन जाता है जहाँ वे आराधना करने लगते है। 'यहीं मेरा भाग्य है, मुझे इसे झेलना होगा,' वे कहते हैं। और उसके बाद, वे इस दुख, आँसू और मानसिक व्यथा से छुटकारा पाने की कोशिश छोड़ देते है।

शुतुर मुर्ग (ऑस्ट्रिच) की विधि - पीछे पड़ने वालों से बचने के लिए ऑस्ट्रिच अपने सिर को रेत में छिपा लेती है - लगता है उसी तरह आँख मूँद लेने की नीति ही आजकल दुनिया भर में आदमियों के लिए पलायान की विधि बन गई है। 'अपनी चिंताओं को भूलने की कोशिश करो, अपने मन में जो कैंसर है फिल्मों को देखते या टेलीविज़न के सामने बैठे दूर करने की कोशिश करो। या फिर यौनक्रिया का कुछ और प्रकार आजमाके देखो,' शैतान और उसके साथी ऐसा कहते हैं।

मगर बाइबल कहता है , 'यहोवा बन्दियों को स्वतन्त्र करता है।' फिर मैं ऐसे आदमियों को देखता हूँ जो घृणा से अंधे बन गये है। वे नफ़रत के बन्दी है। द्वेष उनका धर्म है। वे प्रभु यीशु से घृणा करते है। मेरे जैसे लोग, जो प्यार के बारे में बात करते है, उन से भी वे घृणा करते हैं। नफ़रत उनके जीवन का मुद्दा और राज करता आवेश है। मिल में मजदूरी कर रहे एक हिन्दू आदमी लम्बी हड़ताल के कारण आर्थिक रूप से विकलांग था। प्रबंधकों के विरुद्ध, सच हो या काल्पनिक अपराधों के बारे में उसे बहुत अच्छे से प्रशिक्षण दिया गया था। आज, उसने मुझे कुछ ही मिनटों में प्रबंधकों के दुराचार के विरुद्ध कड़वाहट को प्रेरित करने वाला भाषण दिया। घृणा करने के लिए उसे प्रशिक्षण दिया गया था। प्रार्थना माँगते वह मेरे पास आया था।

दुनिया को नफ़रत नहीं , प्रेम की जरूरत है। मगर वह दोस्तों जो उस आदमी को सभा में लेकर आया था। वह खुद एक दफा यीशु से घृणा करता था। वह दारू पीता था और अपनी पत्नी को सताता था। प्रभु यीशु उससे मिले और उसके जीवन को बदल दिया। अब वह कारखाने में मजदूरों का अधिकर्मी बनकर, प्रेम का सुसमाचार से कई लोगों को आजाद करने में मदद कर रहा है।

मेरे एक श्रोता जिसे हमारे कार्यक्रम को सुनने का मौका मिला था, मुझसे मिले थे:'क्या आप मेरे लिए प्रार्थना करोगे, यह मेरी, समस्यायें है। मैं जानता हूँ ज्यादातर प्रचारक सिर्फ पैसों के लिए प्रसारण करते है। मैं एक साम्यवादी हूँ। मगर मैं मसीह की तरफ फिरा हूँ .. ।'

मैं ने उसे जवाब देते लिखा था: चाहे आप इस दुनिया में सब से गरीब क्यों ना हो, फिर भी हम आप से प्यार करेंगे और आप के लिए प्रार्थना करेंगे।' इधर एक बखूब नौजवान है जो विचार शील है, मगर दुख और समस्याओं से घिरा हुआ है। हम यह सेवा सिर्फ पैसे के लिए कर रहे है - ऐसा सोचने का उसे प्रशिक्षण दिया गया है। अगर यह हमारा उद्देश्य होता, तो इस प्रसारण पर परमेश्वर की आशीष ना रहती।

मेरा समय , शक्ति, प्रार्थना, सोच और यहाँ तक कि पैसा, इनकी बात करे तो लोग जान नहीं पायेंगे, मुझे कितना खर्च करना पड़ता है।' मगर एक आत्मा जो पाप और अशुद्धता से छुटकारा पाता है, उसका मोल दुनिया भर की संपत्ति से भी बढ़कर महान है। याद रखो, एक बन्दी को रिहा करने के लिए मोल चुकाना पड़ता है या फिर उसका स्थान लेने वाले मुक्तिदाता को तौलना पड़ता है। मैं सोच नहीं सकता ऐसा कोई होगा जो किसी के बदले में, फाँसी का फंदा या बिजली की कुर्सी में बैठने के लिए तैयार होगा। मगर यीशु ने आपका दोष, पाप और मौत को अपने ऊपर ले लिया। तो फिर अब भी आप क्यों सलाखों में बन्द हो? बाइबल कहता है:'जो कोई यहोवा का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा।' योएल 2:32; हाँ! वह 'जो कोई' में आप भी हो।

प्रभु यीशु को पुकारो और उसको परखो। क्या यह सब कोई व्यापार की बात है या फिर यीशु सच हैं और जैसे कहा है वैसा ही भला है? आत्मायें जो जंजीरों में थी और बन्धे हुए थे, जिनमें संतुलित सोचने की ताकक न थी, जो घमंड, घृणा और पक्षपात से अंधे बने है,

**ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.**
**BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002**
**CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393**
**MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBSMarg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840**
**GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733**
**SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355**

*ऐसे लोगों ने जब अपनी आखों को, यीशु की तरफ फेर कर उन पर विश्वास किया, तो एक पल में उनको आजादी मिल गयी।*

*यह प्रेम भरा उद्धारकर्ता आपको छुडाने के लिए आपका इन्तजार कर रहा है।*

*महान सेनापति मेक ऑर्थर , प्रसिद्ध जनरल थे जिसने फिल्लिप्पैन्स को आजादी दिलाई, और अंत में दूसरे महा विश्व युद्ध का अंत किया था। मनीला के उत्तरी भाग में युद्ध शिविर में कैद अंग्रेजी बन्दियों को आजाद करते उनके बारे में उन्होंने ऐसा कहा था: (संभवतः 5000 युद्धबंदियों की हत्या किये जाने से बचाने के लिए उस शिविर को कब्जा करने के लिए उस पर शानदार हमला किया गया था।)*

*'जब मैं वहाँ आया था, भूख के मारे, दयनीय कैदी, उत्साह से चिल्ला उठे। मैले-चिथड़े कपड़े पहने, आँसू बह रहे चहरे लिए ऐसा लग रहा था कि अपनी आखरी शक्ति को समेट कर, मेरे हाथ को थामने, मेरे पास पहुँचने के लिए संघर्ष कर रहे है। मुझे चूम रहे थे और मुझे गले मिल रहे थे।'*

*प्रिय श्रोता , उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता यीशु आप के पास खड़े हैं। वह आपका भी उद्धाकर्ता बनना चाहते हैं। अपनी आखों को खोलकर उनके प्रेम को देखो। अपने हृदय को उनके लिए खोलकर, चूमकर उसका स्वागत करो। 'यहोवा बन्दियों को स्वतन्त्र करता है। अपने सिरों को झुकाकर आइये हम उसको धन्यवाद दे।'*

*प्रभु यीशु , हमारे गहराइयों के बन्धनों से छुड़ाने के लिए आप आये हो। आपके प्रेम के लिए हम आपको धन्यवाद देते है।*

*- जोशुआ दानिएल।*

***प्रार्थना से... पृष्ठ 1 से***

अपने सोच-विचार छोड़कर यहोवा की ओर फिरे, और वह उस पर दया करेगा, हां, हमारे परमेश्वर की ओर, क्योंकि वह पूरी रीति से क्षमा करेगा। यहोवा कहता है, 'मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं, न ही तुम्हारे मार्ग और मेरे मार्ग एक जैसे हैं।' " (यशायाह 55:7-8)

बाइबल व्यक्ति को चुनौती देती है। वे उसे ऊंचे और अधिक ऊंचे पर उठने के लिए आह्वान करती है। यदि आप बेकार की पुस्तकें पढ़ते हैं, वो आपको नीचे और नीचे खींचते जायेंगे जब तक कि आपके विचार गंदगी से न भर जायें। जब आपका विचार परमेश्वर के विचार के स्तर तक ऊंचा उठ जाता है, तब आपकी प्रार्थना परमेश्वर की उपस्थिति में मोहक सुगन्ध के रूप में पहुंचती है। चुंगी लेने वाले की प्रार्थना थी, 'हे प्रभु, मुझ पापी पर दया कर।' यही प्रार्थना का आरम्भ है। यीशु हमेशा ही परमेश्वर के विचारों के स्तर पर थे। गतसमनी में हम यीशु को ऊंचे और ऊंचे उठते देखते हैं। पाप के वजन ने यीशु को कुचला और खून उसके रोम-रोम से रिस रहा था। उन्होंने प्रार्थना की, 'मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।' यह उनकी सबसे ऊंची स्तर की प्रार्थना थी। जब आप परमेश्वर के विचार के अनुसार प्रार्थना करेंगे तब वह परमेश्वर के लिए मोहक सुगन्ध होगी।

एक इच्छा, जो परमेश्वर के विचार हैं और जिसने आपकी इच्छा को बंदी बनाया, जो सबसे बहुमूल्य चीज है। जब आपके विचार परमेश्वर के विचार के समान होते हैं तब आप और आपके चारों ओर रहनेवाले ऊपर उठाये जाते हैं। जब आपका हृदय स्वर्गीय स्थानों में उठाया जाता है, आपकी इच्छायें और आपका शरीर भी ऊपर उठाया जाता है। आप ऊंचे स्तर पर रहेंगे। 'मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्धित धूप, और मेरा हाथ उठाना संध्या-बलि ठहरे।' (भजन संहिता 141:2) 'उनको मैं अपने पवित्र पर्वत पर ले आऊंगा और अपने प्रार्थना के भवन में आनन्दित करूंगा। उनके होमबलि और मेल बलि मेरी वेदी पर ग्रहण किए जायेंगे, क्योंकि मेरा भवन सब जातियों के लिए प्रार्थना का भवन कहलाएगा।' (यशायाह 56:7)

जवानों के लिए सबसे आनन्द का विषय है, प्रार्थना का घर। आप जहां भी जायें वहां आपको प्रार्थना का घर तैयार करना होगा। आपकी दीन प्रार्थना एक टूटे आत्मा से निकलती है वह एक महत्वपूर्ण बलिदान है। जब आपकी प्रार्थना आपकी इच्छा के अनुसार होती है और यह आपकी सारे संभाव्य शक्ति को बंदी बना कर परमेश्वर के ऊंच उद्देश्य को पूरी करती है।

जब आप वेदी पर अपने पूरे व्यक्तित्व को अर्पित करते हैं, आपको जानना चाहिए कि आप क्या कर रहे हैं। जब एक पिता अपने बच्चे को एक बहुमूल्य उपहार देता है। वह उससे खेलता है और जब वह बिस्तर पर जाने लगता है तब उसे अपने पिता को रखने कि लिए दे देता है क्योंकि वह यह जानता है कि वह उसके पिता के पास सबसे अधिक सुरक्षित रहेगा। जब हम अपने परमेश्वर को प्रेम करना सीखेंगे, तब हम सीखेंगे कि हमारे अंदर पाई जानेवाली संभाव्य शक्ति उनके पास सबसे अधिक सुरक्षित रहेगी। 'अतः हे भाईयो, मैं परमेश्वर की दया का स्मरण दिला कर तुमसे आग्रह करता हूं कि तुम अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और ग्रहणयोग्य बलिदान कर के परमेश्वर को समर्पित कर दो। यही तुम्हारी आत्मिक आराधना है। इस संसार के अनुरूप न बनो, परन्तु अपने मन के नये हो जाने से तुम परिवर्तित हो जाओ कि परमेश्वर की भली, ग्रहणयोग्य और सिद्ध

इच्छा को तुम अनुभव से मालूम करते रहो।' (रोमियों 12:1-2) आप इस संसार के अनुरूप न बनो। अपनी प्रार्थना से आपको मन को पुनर्जीवित करना है। जब तक आप परमेश्वर की सिद्ध इच्छा पर अपने को नहीं सौंपते हैं तब तक आप सुरक्षित नहीं हैं। एक व्यक्ति जो पिता की इच्छा को करेगा उसे राज्य दिया जायेगा। प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको आत्मा में ऊपर उठाये और पवित्र करें और आपको उच्चतम स्तर पर रखें। वे हमें अपने प्रार्थना के घर में खुशहाल रखेंगे।

- एन.दानियेल।

## *मसीह की रोशनी में आना*

*बाइबल में रोशनी:*

*सन 1954 , मसूद एहमद खान का जन्म उत्तरी पाकिस्तान में एक मोहमदी परिवार में हुआ था। छोटी उम्र में ही, उस में सत्य जानने की इच्छा बढ़ती रही।*

*जब मसूद ने एक बाइबल हासिल किया, उससे कहा गया था: 'हर एक सच्चे मन के खोजी के लिए, यह मुफ्त जीवन का वचन है। इसे लेकर बहुत ध्यान से पढ़ो, मसूद, और वह आपकी आत्मा को सींचेगा।' उसने बहुत ध्यान से बाइबल का अध्ययन करना शुरू किया।*

*एक रविवार , चर्च सभा के पश्चात, मसूद ने वहाँ के पादरी श्रीमान विन्सेन्ट से सवाल पूछा। जैसे कि, "यह कैसे मुमकिन है कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है?" बाइबल में इस सवाल का जवाब है: 'अपने पुत्र (परमेश्वर के) के विषय में की, जो शरीर के अनुसार दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। पवित्रता के आत्मा के अनुसार मृतकों में से जी उठने के द्वारा सामर्थ्य के साथ परमेश्वर का पुत्र घोषित हुआ।' (रोमियों 1:3-4)*

*एक शाम मसूद ने इन शब्दों को पढ़ा था: 'यीशु ने बहुत से अन्य चिह्न भी चेलों के सामने दिखाए जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए हैं। परन्तु ये जो लिखे गए हैं इसलिए लिखे गए कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।' (यूहन्ना 20:30-31)*

*इन शब्दों ने ठीक मसूद की जरूरत को छू लिया, मगर वह आसानी से मसीह के देवत्व को स्वीकार नहीं कर पाया। फिर भी आगे पढ़ते, उसको यह स्पष्ट हो गया कि यीशु के लिए चमत्कार करना, सांस लेने जैसी आम बात है। केवल परमेश्वर ही चमत्कार कर सकते हैं। मसीह ने तो कई चमत्कार किए हैं। मसीह को परमेश्वर कहने का क्या वह साहस कर पाएगा?*

*मसूद प्रार्थना करते थरथराया। उसने रोते हुए प्रार्थना की कि उसे सीधा मार्ग दिखाया जाय। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उससे बात की - जब मसूद ने अपनी बाइबल को देखा, और उसे उठाकर पढ़ा: 'माँगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूंढो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। क्यों कि प्रत्येक जो मांगता है उसे मिलता है, और जो ढूँढता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा।' (मत्ती 7:7)*

*अगला पूरा हफ्ता , मसूद बाइबल में दर्ज किये गए चमत्कारों का अध्ययन करता रहा। उसने देखा कि यीशु के पास परमेश्वर का पूरा सामर्थ्य है। मगर अपने शत्रुओं को नाश करने या अपना प्राण को बचाने के लिए उन्होंने उस सामर्थ्य का इस्तेमाल नहीं किया। जबकि, पुराने नियम के नबी कहते हैं, 'परमेश्वर यो कहता है ....' लेकिन यीशु हमेशा कहते थे, 'मैं तुम से सच कहता हूँ ... ।'*

*इसके अलावा , यीशु हमेशा किसी भी नश्वर आदमी के विपरीत, हमेशा अपने बारे में बात करते थे: 'हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ: मैं तुम्हें विश्राम दूँगा', 'मैं और पिता एक है', 'मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता', 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है', और 'पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ ...' उसकी कब्र खाली थी और जब वह स्वर्ग में उठा लिया गया, तो बहुतों ने देखा था।*

*अन्धकारमय स्थान में रोशनी:*

*एक बुजुर्ग ईसाई , श्रीमान मास्से के पास, मसूद उद्धार के विषय एक सवाल लेकर आया। 'हम मसीही', जवाब आया, 'विश्वास करते है कि, सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महीमा से रहित है।' धार्मिक कार्य करने से हम अपने आप का उद्धार नहीं कर पायेंगे क्योंकि किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं है, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हम उद्धार पाए।' बेशक वह हमारा प्रभु यीशु है। वही एक मात्र रास्ता है जिससे हम परमेश्वर के उस अनुग्रह को जान पायेंगे जो उद्धार लाता है।'*

*एक और दफा , मसूद इस विषय से चौंक गया कि कुरान में कही पर भी नहीं कहा गया है कि यीशु ने पाप किया है। और बाइबल में प्रभु यीशु अपने बैरियों से यह पूछ पाये: 'आप में से कौन*

## सत्य की परख!

***"क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तो सब मनुष्यों के उद्धार के लिए प्रकट हुआ है। वह हमें यह सिखाता है कि ... भक्ति से जीवन बिताएँ और उस धन्य आशा की, अर्थात अपने महान परमेश्वर यीशु मसीह उद्धारकर्ता की महिमा के प्रकट होने की, प्रतीक्षा करते रहें।" (तीतुस 2:11-13)***

मुझ पर दोष लगा पायेगा?' कुरान में मुहम्मद को पाप रहित नहीं दर्शाया गया। इसके अलावा ईसाई धर्म में स्त्रियों और तलाक के बारे में बिलकुल अलग ही दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। (मत्ती 5:31-32)

मसूद इन सब बातों के बारे सोचते मौन रहा। तभी हवा के झोंके ने उसके बाइबल को इस पन्ने पर पलट दिया: 'हे मेरे लोग, उनमें से निकल आओ, जिससे कि तुम उसके पापों के सहभागी न बनो और तुम पर उसकी विपत्तियां न आ पड़े, क्योंकि उसके पापों का ढेर स्वर्ग तक पहुँच गया है, और परमेश्वर ने उसके अधर्म के कामों को स्मरण किया है।' (प्रकाशितवाक्य 18:4-5) मसूद अन्दर ही अन्दर थरथराया। और जन्नत के बारे में जो मुसलमानों की तालीम है उसके उल्टे, यीशु के यह सरल शब्द है: 'क्यों जब लोग मृतकों में से जी उठते हैं तो वे न विवाह करते और ना ही विवाह में दिए जाते हैं वरन वे स्वर्ग में दूतों के समान होते है।' (मरकूस 12:25) मसूद ने रोते हुए परमेश्वर को पुकारा।

परमेश्वर उसको सत्य के बारे में सोचने पर मजबूर करता रहा और वह दोनों की तुलना करता रहा। मसीही सत्य कुछ अलग ही है। जैसेकि, 'परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके आराधक आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें।' (यूहन्ना 4:24)

स्वयं परमेश्वर ने मसूद को मसीह के क्रूसित होने का विषय समझ दिया। यीशु का क्रूसित होना, मरना, पुनरुत्थान और स्वर्ग में उठाये जाना - यह अत्यंत महत्वपूर्ण है, और सारी परंपरायें इन घटनाओं से सहमत है। इसके अलावा, यीशु ने पुराने नियम की भविष्यवाणी को पूरा किया है। उसकी खोज का अन्त हो चुका और उसने अपनी सारी किताबों को बन्द किया। अब अगला कदम क्या होगा?

बेटे का रोशनी में प्रवेश:

एक सपने में अपने आप को रविवार के दिन गिरजाघर में देखा। सच्चाई की खोज में सब कुछ छोड़, अब वह दो विपरीत शक्तियों की दुविदा में पड़ गया है। पीछे मुडकर देखा तो, इस्लाम का विधिपालन और आफत नज़र आ रही है। और आगे मसीह यह कहते सुनाई दिया: 'मेरे पीछे चेले, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।'

एक सुबह , रेडियो पर सुने कुछ बाइबल के वाक्यों ने मसूद के दिल को छू लिया: 'इसलिए यह कह कर चिन्ता न करो, 'हम क्या खाएंगे?' अथवा 'क्या पीएंगे?' या 'हम क्या पहिनेंगे?' पर तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है। परन्तु तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें दे दी जाएंगी।' मसूद को आपने मेज़बान द्वारा बेदख़ल किये जाने का डर था।

उस दिन मसूद ने तीन दिन काम से छुट्टी ली। 'मैं इतने समय से तुम्हारे साथ हूँ, फिर भी तू मुझे नहीं जानता?' (यूहन्ना 14:5-9) यूहन्ना रचित सुसमाचार के इस भाग के शब्द ने उसको छू लिया।

परमेश्वर मसूद को अपनी पाठशाला में दाखिला देना के इन्तजार में है, मगर वह डर रहा था। मगर अब अचानक डर के मारे सोचने लगा कि कहीं वह परमेश्वर को परखने में बहुत दूर जाने के खतरे में तो नहीं ? व्याकुल हो वह रो पड़ा।

अचानक , उसका कमरा प्रकाश से भर गया और सुसमाचार से एक घटना उसके आँखों के सामने दिखाई देने लगी। थोमा बाकी चेलों के साथ उदास और संदेह से भरे बैठा था। तब यीशु आया, और उनके मध्य खड़े होकर कहा, 'तुम्हें शान्ति मिले।' तब उसने थोमा से कहा, 'अपनी उंगली यहां ला और मेरे हाथों को देखो, और अपने हाथ बढ़ा कर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो।' थोमा ने उत्तर देते हुए उससे कहा, 'हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!' यीशु ने उस से कहा, 'क्यों कि तू ने मुझे देखा है, क्या इसीलिए विश्वास किया है? धन्य है वे जिन्होंने मुझे नहीं देखा, फिर भी विश्वास किया है।'

वह दृश्य धुंधला पड़ गया। थोमा की तरह मसूद भी अविश्वासी और संशयी था। और यीशु ने उसे दिखाया की अब भी वह उससे प्यार करता है और अपने पीछे चलने का आह्वान किया।

यकायक , मसूद ने बहुत दुःख महसूस किया। 'वे मेरे दिल के द्वार पर ही थे, और मैं ने उन के लिए दिल नहीं खोला।' तौभी धीरे-धीरे प्रकाश आने लगा। और वह अपने घुटनों के बल गिर कर रोने लगा: 'हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूँ। मेरे हठीलेपन को माफ करना। मेरे अविश्वास को माफ करके मुझे ग्रहण करना।'

फिर एक सौम्य वाणी ने कहा : 'मैं जिनसे प्रेम करता हूँ उनको डांटता औऱ ताड़ना देता हूँ - इसलिए सरगर्म हो और मन फिरा।' (प्रकाशितवाक्य 3:19)

जब मसूद उठा , वह बदल चुका था; जो मन की शान्ति, विश्राम और सुरक्षित होने का एहसास, उसने उस रात अनुभव किया था, वह आलौकिक था।

दो साल से भी अधिक , उसका अन्वेषण और अध्ययन सफल हो गये है: इस बात में कि अपनी आत्मा में यह प्रकाशन से कि पिता परमेश्वर की महिमा के लिए, अब यीशु मसीह अपना प्रभु और परमेश्वर है।

अगले ही दिन मसूद मिस्टर मास्से को देखने गया। 'अब बापतिस्मा लेने में मेरे लिए क्या रुकावट है?' (प्रेरितो के काम 8:36) उसने पूछा।

'मसूद, आप जानते हो इसका क्या मतलब होगा?'

'मैं समझता हूँ।' जवाब आया, 'और परमेश्वर मेरी मदद करेंगे।'

'मौत के बारे में क्या, मसूद?' मिस्टर मास्से ने तुरन्त पूछा, 'जो कोई तुम्हें मार डालेगा, समझेगा कि परमेश्वर की सेवा कर रहा है।' (यूहन्ना 16:2)

मगर परमेश्वर की शान्ति उसके लिए वास्तविक थी। 'तब भी मैं मसीह को याद करूँगा जिन्होंने कहा, 'हे पिता, इन्हे क्षमा करना, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।' (लूका 23:34)

मसूद , परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह के प्रकाश में प्रवेश कर चुका है।

-स्टीवेन मसूद का 'केप्टीव ऑफ दा क्रइस्ट' पढ़ें।

# अनंतकाल में - मैं अपने आप को कहाँ पाऊँगा?

एक रईस और नौजावन फ्रांसीसी आदमी मन में बहुत बेदिली से पीड़ित था। उसी कारण वो एक खास डॉक्टर से मिलने वह लंदन गया। उसके पास धन, पद-प्रतिष्ठा, प्यार, पैसा और मान-सम्मान सब कुछ था। मगर ये कुछ भी, "अपनी" आत्मा में छायी उस उदासी को निकाल नहीं पाया।

डॉक्टर साहब ने अंत में उनसे एक सवाल पूछा: "अपने विचारों में बहुधा किस विषय को लेकर आपका मन सोचता रहता है?"

"डॉक्टर साहब, आपने ये बात छेड़ दी है, पर इस विषय पर मैं मुश्किल से बात करना पसंद करता हूँ", उस सज्जन ने जवाब दिया, अपनी नास्तिक पृष्ठभूमि के बारे में जाहिर करते हुए बोला, "मैं प्रकाशन पर तो विश्वास नहीं करता" - फिर भी एक धारणा उस पर हावी होकर उसका पीछा नहीं छोड़ रही।

"पिछले तीन सालों से" उसने अंगीकार किया, "ये शब्द मेरा पीछा नहीं छोड़ रहे थे, अनन्तकाल में - मैं अपने आपको कहाँ पाऊँगा?" न्याय निर्णय के उस अंतिम दिन का दृश्य हमेशा मेरे मन में रहता है! सब चीजों का अंत आ चुका है, और एक महान श्वेत सिंहासन तैयार किया गया है। एक महिमामय उस पर विराजमान है जिसके कर्कश न्याय से भीरी नजरों से मैं भयाक्रांत हो जाता हूँ। भेदनेवाली उसकी नजर से मैं बचने की कोशिश करता हूँ, मगर आकाश और पृथ्वी गायब हो चुके हैं और मैं अकेला रह गया हूँ। हर पल मैं वही भयानक शब्द सुनने की अपेक्षा में रहता हूँ "हे शापित लोगो, मुझ से दूर होकर उस अनन्त अग्नि में जा पड़ो जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है!"

"आप ऐसी सजा मिलने की अपेक्षा क्यों कर रहे हो?" "हाँ, लोगों की नजर में मेरा जीवन तिरस्कृत तो नहीं ... मगर ऐसी चकाचौंध महिमामय की उपस्थिति में, - ऐसी निश्कलंक पवित्रता में - मेरे अति उत्तम कार्य़ भी काले और घिनौने लगने लगते हैं। मैं दोषी और दंडित महसूस करता हूँ। और ऐसी जगह खोजने की इच्छा करता हूँ जहाँ मैं उनकी उपस्थिति से छिप जाऊँ।"

"मेरी विषाद उदासी का यही कारण है। मैं उस भयानक स्वप्न से बच नहीं पाता," उस रईस आदमी ने कहा।

"आह!" डॉक्टर साहब ने उत्तर दिया, "मुझे डर है कि आप एक गलत वैद्य के पास आये हो।"

"क्या मेरे लिए कोई आशा नहीं है?" वह नौजवान पुकार उठा। दिन के समय जब मैं चल फिर रहा हूँ, और रात के समय जब मैं लेटता हूँ यह दृश्य लगातार मेरे मन में छाया रहता है। "अनन्तकाल, मैं कहाँ बिताने वाला हूँ?" उसे मदद की सख्त जरूरत थी।

डॉक्टर ने फिर सूचित किया कि वह भी एक दफा ऐसी ही हालत में थे। और एक बाइबल लेते हुए कहा, "मेरे पास एक पुराना ग्रन्थ है, जिस में आपके रोग का इलाज है।" उन्होंने यशायाह 53 अध्याय पर पन्ना पलटा, "हमारे सन्देश का किसने विश्वास किया? क्योंकि वह उसके सामने कोमल अंकुर के समान और सूखी भूमि से निकली जड़ के समान उगा। उसमें न रूप था, न सौंदर्य कि हम उसे देखते, न ही उसका स्वरूप ऐसा था कि हम उसको चाहते।"

"किसके बारे में यह वचन बात कर रहें है?" उस सज्जन ने पूछा। "प्रभु यीशु मसीह के बारे में जिनको परमेश्वर ने इस दुनिया में भेजा है कि उसके मृत्यु के द्वारा वह हमारे पाप का प्रायश्चित करे।"

डॉक्टर साहब ने फिर आगे पढ़ा, "वह तुच्छ जाना गया और मनुष्यों का त्यागा हुआ था। वह दुखी पुरुष था और पीड़ा से उसकी जान पहचान थी। वह ऐसे मनुष्य के समान तुच्छ जाना गया जिस से लोग मुख फेर लेते हैं, और हमने उसका मूल्य न जाना। ... परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया, वह हमारे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए। हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे, हम में से प्रत्येक ने अपना अपना मार्ग लिया, परन्तु यहोवा ने हम सब के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।"

"इसका क्या अर्थ है, डॉक्टर?"

"यह कि परमेश्वर के पुत्र ने पापी का स्थान लिया है, और पापी के योग्य जो सजा है उन्होंने अपने ऊपर ले ली।"

"क्या यह संभव है, डॉक्टर? यह कैसी दिव्य सुन्दरता और सादगी है! निर्दोष का, दोषी के लिए मरना!"

डॉक्टर ने आगे पढ़ा। , "क्या आप इस पर विश्वास करते हो?" उस रईस आदमी ने पूछा, "कि स्वेच्छा से वो स्वर्ग छोड़कर, इस पृथ्वी पर आये, पीड़ा उठाई और मर गये ताकि वह हमारी रक्षा करें?" हाँ, डॉक्टर उस बात का विश्वास करते थे; उन्होंने मसीह का संदेश दिया और उसके उद्धार के बारे में बताया। फल स्वरूप जैसा डॉक्टर ने किया था, उस रईस आदमी ने भी किया – 'हमारे' के बदले में 'मेरा' लगाया और कहा: 'वह मेरे ही अपराधों के कारण बेधा गया, वह मेरे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया; मेरी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी। उसके कोड़े खाने से मैं चंगा हुआ।'

अनन्तकाल को लेकर सवाल और कहाँ पर वह बितायेगा, वह सुलझ गया। विश्वास करने से उसने आनन्द और शान्ति पाई।

- हेन्री पिकरिंग का '100 थ्रिल्लिंग टेल्स' देखे।